हिंदी साहित्य के आधुनिक विमर्श

डॉ. शालिनी वाटाणे

11.	कोरकू लोक संस्कृति **– डॉ. सुनील मावस्कर**	87
12.	हिंदी साहित्य में विकलांग विमर्श **– प्रा. डॉ. सुरेखा मंत्री**	93
13.	विष्णु प्रभाकर कृत 'आवारा मसीहा' एक विमर्श **– प्रा. सुनील कुमार मावस्कर**	99
14.	विकलांगता एक वरदान **– प्रा. डॉ. गंगा गायके**	105
15.	डॉ. रामकुमार वर्मा के काव्य में नैतिक चेतना के स्वर **– प्रा. नलिनी पशीने**	109
16.	हिन्दी बाल कविताओं में पर्यावरण चेतना **– आनंद बक्षी**	118
17.	हिन्दी की अम्बेडकरवादी कविता **– प्रा.डॉ.भरत जवजाले**	122
18.	वर्तमान समाज की नारी के कार्यकौशल्य को साहित्य में समावेशित करने की आवश्यकता **– प्रा. डॉ. मनोज जोशी**	127
19.	हिंदी उपन्यासों में आदिवासी विमर्श **– प्रा. छाया जाधव**	132
20.	स्त्री–विमर्श का इतिहास **– डॉ. कृष्णकुमार उपाध्याय**	137
21.	21वीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में किन्नर विमर्श **– भावना पाटील**	143
22.	'मैं भी औरत हूँ' उपन्यास में किन्नर विमर्श **– डॉ. सविता चौधरी**	149
23.	डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल के बाल–साहित्य में वैज्ञानिक एवं बाल–मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण **– कु. सुनीता खेकाळे**	160
24.	रवीन्द्रनाथ टैगोर का बाल–साहित्य में योगदान **– डॉ. सुनीता बुंदेले**	165

हिन्दी बाल कविताओं में पर्यावरण चेतना

प्रा. आनंद बक्षी

बाल साहित्य वह होता है जो बाल मनोभावों का पोषण करनेवाला हो। अर्थात जो काव्य या गद्य रचना बाल मनोवृत्तियों के अनुकूल होती है, वह बाल साहित्य के श्रेणी में आती है। आज के नौनिहाल आने वाले समय में सुनहरे राष्ट्र की धरोहर है। बाल मन अत्यंत सरल एवं संवेदनशील होता है, और बालसाहित्य वह साहित्य है जो बच्चों का मनोरंजन के साथ ही बालमन उपवन में संस्कारों के बीजों को आरोपित करके, उन्हें अंकुरित होने के लियें अनुकूल वातावरण प्रदान करता है। बाल साहित्य के अर्थ पर विचार करते हुए डॉ. सुरेन्द्र विक्रम तथा जवाहर 'इन्दु' ने कहा है– "बाल मनोविज्ञान बाल साहित्य लेखन की एक कसौटी है। बाल मनोविज्ञान का अध्ययन किए बिना कोई भी रचनाकार स्वस्थ एवं सार्थक बाल साहित्य का सृजन नहीं कर सकता है। यह बिल्कुल निर्विवाद सत्य है कि बच्चों के लिए लिखना सबके वश की बात नहीं है। बच्चों का साहित्य लिखने के लिए रचनाकार को स्वयं बच्चा बन जाना पड़ता है। यह स्थिति तो बिल्कुल परकाया प्रवेश वाली है।"[1]

छोटे बच्चों के लिए प्रकृति कौतूहल का केन्द्र होती है। दुनिया में जन्म लेने के बाद बच्चा पेड़, पौधे, चिड़िया, फूल, आसमान, तारे, चन्द्रमा आदि को बड़े ध्यान से देखता है और जैसे–जैसे वह बड़ा होता जाता है, उसकी जिज्ञासा बढ़ती जाती है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि बच्चे प्रकृति से बेहद प्रेम करते हैं। निश्छल दृष्टिवाले बालक प्रकृति के सहज सुन्दर स्वरूप को देख देखकर अभिभूत होते हैं। यही कारण है कि बाल साहित्यकारों ने बाल साहित्य की सभी विधाओं में प्रकृति वर्णन को प्राथमिकता प्रदान की है।

डॉ. शुचिता सेठ ने समकालीन हिन्दी बाल साहित्य में डॉ. परशुराम शुक्ल द्वारा वर्णित प्रकृति चित्रण की समीक्षा करते हुए लिखा है– "प्रकृति के साथ मानव का आदिकालीन संबंध है। प्रकृति की गोद में ही मानव ने जीवन के क्रियाकलापों का आनन्द देखा है, परन्तु वर्तमान में वही प्रकृति बाधित हो

रही है। मनुष्य, पेड़–पौधों की अंधाधुंध कटाई करके पर्यावरण को प्रदूषित कर रहा है। औद्योगीकरण के युग में उद्योगों के कचरे से भी रासायनिक प्रदूषण फैल रहा है। यातायात और संचार के साधनों की अधिकता के कारण भी कार्बन डाई आक्साइड आदि तमाम गैसों के फैलाव के कारण वातावरण प्रदूषित हो रहा है। ऐसे में पेड़ पौधों, बादल, वर्षा, फूल, चिड़िया, नदी, पर्वत आदि का सौन्दर्य किताबों के चित्रों तक सीमित होता जा रहा है।"[2]

उपर्युक्त कथन में डॉ. शुचिता सेठ ने प्रकृति और पर्यावरण के प्रदूषण पर बेबाक टिप्पणी की है। आज के वैज्ञानिक आविष्कारों और औद्योगिक प्रदूषणों से प्रकृति का स्वरूप विषाक्त होता जा रहा है। बच्चों को दूर से प्रकृति को देखने दिया जाता है। इसके बाद भी बाल साहित्यकार बच्चों की जिज्ञासा को शांत करने के लिए तथा उनके ज्ञानवर्धन के लिए प्रकृति के विविध रूपों का चित्रण बाल साहित्य में करते रहते हैं।

डॉ. रामकुमार वर्मा ने बालमन की जिज्ञासा, उत्सुकता और कौतूहल के भाव का चित्रण करते हुए प्रकृति के प्रति बच्चों की भावना को एक कविता में इस तरह व्यक्त किया है–

"किसने ये मोती बिखराये, इतने फूल कहाँ से आये।
चमक रहे हैं कितने तारे, चंदा के हैं लाल दुलारे।
हँस–हँस कर वे क्या कहते हैं। हम तुमसे ऊपर रहते हैं।
पर हमको यह जग ही भाता; क्योंकि यहाँ पर हैं पितु–माता।।"[3]

वृक्ष पर्यावरण के प्रदूषण को दूर करके स्वच्छ हवा देते हैं। इसीलिए समकालीन बाल साहित्यकारों ने बच्चों को बाल कविताओं के माध्यम से वृक्षारोपण की प्रेरणा प्रदान की है। डॉ. श्यामसुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल' ने एक बालगीत में लिखा है–

"पेड़ संत हैं दयावन्त हैं, इनकी महिमा न्यारी।
पेड़ तुम्हारे जैसा जग में, और नहीं हितकारी।।
X X X
वृक्षारोपण को अपनाकर, हम सब वृक्ष लगावें।
आओ परहित में श्रम करके, जीवन सफल बनायें।"[4]

प्रकृति वर्णन का जो सहज स्वाभाविक वर्णन स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व में बाल साहित्य में पाया जाता है, वैसा स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के साहित्य में नहीं। बहुत सम्भव है कि इसका कारण प्रकृति के स्वरूप का विकृतिकरण रहा हो। स्वातंत्र्योत्तर भारत में प्रगति के नाम पर प्रकृति का धुँआधार विनाश हुआ है। जंगलों में खड़े वृक्षों की अवैध कटाई, पहाड़ों से पत्थर और खनिजों

की खुदाई, नदियों से रेत का अवैध उत्खनन, गलत तरीके से नदियों पर बाँधों का बंधान, स्वतंत्रतापूर्वक प्राकृतिक क्षेत्रों में कारखानों का निर्माण और संचालन, बड़े–बड़े रासायनिक कारखानों से प्रदूषण आदि के कारण प्रकृति का स्वरूप विकृत हुआ है। अतएव जो बाल साहित्यकार प्रकृति के वर्तमान विकृत स्वरूप के साक्षी हैं, उनके द्वारा लिखे गए बाल साहित्य में प्राकृतिक विरूपण का संकेत अवश्य ही किया गया है। कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास आदि सभी विधाओं के वर्णनों में प्राकृतिक पर्यावरण प्रदूषण के प्रति चेतावनी अवश्य दी गई है। इस संबंध में श्यामसुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल' के एक बाल गीत की कुछ पंक्तियाँ यहाँ प्रस्तुत की जा रहीं हैं, जिनमें वायु प्रदूषण को दूर करने में वृक्षों की महती भूमिका की ओर संकेत किया गया है–

"वायु प्रदूषण दूर भगाकर
झूम झूम इठलाते हैं।
वर्षा गर्मी तीव्र शीत से
पेड़ नहीं घबराते हैं।"[5]

प्रकृति और पर्यावरण के विषय में जितना खुलकर और यथार्थ वर्णन डॉ. परशुराम शुक्ल ने किया है वैसा अन्य समकालीन बाल साहित्यकारों ने नहीं किया। डॉ. शुक्ल ने बाल साहित्य की सभी विधाओं– गीत, कविता, कहानी, नाटक और उपन्यास में प्रकृति और पर्यावरण के सुखद तथा दुःखद रूप एवं विरूप को प्रस्तुत किया है। डॉ. शुक्ल के कुछ दोहे दृष्टव्य हैं–

"प्रकृति प्रभावित सभी पर,बच्चों की क्या बात?
जीवन इनका प्राकृतिक, दिन हो चाहे रात।।

X X

प्रकृति और पर्यावरण, दोनों पर दो ध्यान।
इनसे बच्चों को मिले, जीवन का वरदान।।

X X X

प्रकृति प्रदूषण कर रहा, ऐसा घोर विनाश।
बच्चे जीवित बचेंगे, कम है इसकी आस।।"[6]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि समूचे बाल साहित्य में प्रकृति की सुन्दरता और उपयोगिता का अच्छा चित्रण किया गया है। प्रकृति और पर्यावरण के प्रदूषण के सम्बन्ध में स्वातंत्र्योत्तर बाल साहित्य में यथावसर उपयोगी वर्णन किए गए हैं।

संदर्भ

1. हिन्दी बाल साहित्य : एक अध्ययन, डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, 1969, पृष्ठ 114
2. समकालीन हिन्दी बाल साहित्य, डॉ. शुचिता सेठ, अंकित पब्लिकेशंस, जयपुर, 2014, पृष्ठ 246, 247
3. हिन्दी बाल साहित्य : एक अध्ययन, डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, 1969, पृष्ठ 153
4. हम भारत की शान बनेंगे, डॉ. श्यामसुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल', ज्ञान सरोवर, कानपुर, 1994, पृष्ठ 20–21
5. हम भारत की शान बनेंगे, डॉ. श्यामसुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल', ज्ञान सरोवर, कानपुर, 1994, पृष्ठ 33
6. बाल सतसई, डॉ. परशुराम शुक्ल, नमन प्रकाशन, दिल्ली, 2013, दोहा क्र. 433, पृष्ठ 83, दोहा क्र. 445, पृष्ठ क्र. 84, दोहा क्र. 452, पृष्ठ 81

कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, चिखलदरा
मो. न. 09403839094
anandbakshi.1367@gmail.com